International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(4): 92-93

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(4): 92-93
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-05-2018
Accepted: 19-06-2018

मीरा

डॉ0 प्रभा माधुनी
निर्देशिका, पूर्व प्राचार्या एवं अध्यक्षा, संस्कृत विभाग, वैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
मीरा

वाल्मीकीय रामायण में पर्यावरण एवं सामाजिक व्यवस्था का मार्गदर्शन

मीरा, डॉ0 प्रभा माधुनी

प्रस्तावना

आधुनिक समय में पर्यावरण समस्या विश्व व्यापक है– पर्यावरणीय असन्तुलन जिसने आधुनिक में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की स्थिति भयावह बना दी है। पर्यावरण एक प्रकार से मानव की विकास यात्रा है। पर्यावरण का जीवन से सीधा सम्बन्ध है। जीवन में अनेक धाराओं, घटनाओं, कृतियों और अन्तर्सम्बन्धों का समागम होता है, उसी प्रकार पर्यावरण में भी अनेक विषम क्षेत्रों का सम्बन्ध होता है। मानव प्रकृति और समाज दोनों से जुड़ा है। प्रकृति और समाज दोनों का स्वरूप व्यापक और वृहद है। प्रकृति के अध्ययन में वनस्पतिशास्त्र, भूगोल, कृषि, वानिकी, जीव विज्ञान, रसायन, भौतिक शास्त्र आदि विषय आ जाते हैं। समाज का अंग होने के साथ ही वह सभी परिस्थितियों अन्तर्सम्बन्धों एवं प्रतिक्रियाओं का भी अंग बन जाता है जो अतीत से भविष्य तक अपना सम्बन्ध रखती है, उनके विश्वास आस्थाएँ, पूजा पद्धतियों, रहन–सहन के तरीके, सोचने के ढंग, पूर्वजों से लेकर वंशजों तक की जीवन यात्राएँ उसकी प्रतिक्रियायें सभी इस विराट समाज से जुडी हैं। यदि मानव इतिहास को अतीत, वर्तमान और भविष्य के सन्दर्भ में देखा जाय तो उसे नियतवादी संभावनावादी एवं नव–नियतवादी होना आवश्यक है। वर्तमान मानव जिस संभावनावादी युग में संरक्षित है उसमें पर्यायवरण के समक्ष दो महत्वपूर्ण संकट प्राकृतिक विदोहन एवं पर्यावरण प्रदूषण व्याप्त है। अब समस्या यह है कि पर्यावरण से आगे बढ़कर आये मानववाद का पर्यावरण पुनर्समायोजन कैसे संभव हो।

हमारे ऋषियों मुनियों ने प्रकृति के सन्दर्भ में जिस पर्यावरण की परिकल्पना की थी, उसकी आज सर्वाधिक आवश्यकता है। प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद में वर्णित पर्यावरण सन्दर्भ है–"प्रभु प्रातः काल जब हम आँखें खोले, तब पृथ्वीलोक व द्युलोक हमारे लिए सुखकारी हो जब हम अन्तरिक्ष की ओर आँखें उठाकर देखें तो अन्तरिक्ष भी हम पर सुख की वर्षा करे। पृथ्वी की सम्पूर्ण वनस्पति हमारे लिए मंगलकारी हो। हे विश्वपते ! आपकी कृपा हमारे ऊपर ऐसी हो कि हम भी शुभ कार्य करें और हमारे चारों ओर सुख की वर्षा होती रहे।" [1]

पर्यावरण वेदों में नहीं अपितु सभी ग्रन्थों में समायोजित है रामायण तो निःसन्देह एक महान रचना है। उसमें सामजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और आदर्शमय जीवन की समग्रताओं का समावेश है। सामाजिक कर्तव्यों का पालन कराने के लिए परिवार, मानवीय व्यक्तित्व के विकास में कितना योगदान देता है। इसका वर्णन वाल्मीकि ने पारिवारिक जीवन के प्राचीन आदर्शों को भावी पीढ़ियों के लिए अपनी रामायण में सुरक्षित कर दिया है।

रामायण में परिवार का रूप निःसन्देह पैतृक था। उसमें पिता कुटुम्ब का मुखिया था, जिसका आदेश सर्वोपरि होता था। पुत्र और पुत्रियों पर पिता का पूर्ण नियंत्रण था। यहॉ तक कि पिता की अनुमति के बिना वे अपना जीवन–साथी नहीं चुन सकते थे। [2]

उस समय परिवार पूर्ण रूप से संयुक्त ही था। सारे सदस्य एक ही मुखिया की आज्ञा शिरोधार्य करते थे। प्रत्येक गृहस्थ को माता–पिता की सेवा से ही हर विषय का अद्भुत ज्ञान प्राप्त होता है। माता कौशल्या से वन जाने की अनुमति माँगते हुए राम ने यही तर्क किया था कि पिता की आज्ञा मानकर मैं पूर्वकाल के धर्मात्मा पुरुषों द्वारा सेवित मार्ग पर ही चल रहा हूँ। [3] पिता और माता की आज्ञा का पालन पुत्र का सर्वोपरि कर्तव्य है।

परिवार के सदस्यों का सौहार्दमय सम्बन्ध ही आर्य संस्कृति का प्रधान संवल, उसकी उत्कृष्टता का प्रमुख रहस्य रहा है। संयुक्त परिवार विभिन्न सदस्यों के बीच स्नेह और सद्भावनापूर्ण सम्बन्धों का एक उत्कृष्ट चित्र रामायण में प्रस्तुत किया है। राजा दशरथ के पारिवारिक जीवन का चित्रण कर वाल्मीकि ने पिता–पुत्र, भाई–भाई, पति–पत्नी, देवर–भाभी, सास–पुतोहू आदि के स्नेह एवं अनुकरणीय

सम्बन्धों के प्रति समुज्ज्वल प्रेंम उपस्थित किये है। दशरथ की रानियों का पारस्परिक व्यवहार नितांत सौहार्दपूर्ण था। कौशल्या का कैकेयी के प्रति भगिनीवत् व्यवहार था। [4]

रामायण में वाल्मीकि का कथन है कि राजा दशरथ के राज्य में कोई ऐसा नहीं था जो नास्तिक असत्यवादी नाना शास्त्रों से अनभिज्ञ अथवा अविद्वान हो। [5] माता–पिता बालक को गुरु के अधीन रखकर विद्याध्ययन कराया करते थे। राजकुमारों की गुरूकुल में शिक्षा व्यवस्था थी। गुरू आदर्श शिष्य को सत्पात्र समझकर वला और अतिवला विद्या प्रदान करते थे। [6]

शिक्षा व्यवस्था

उस समय छात्र जीवन में आत्मानुशासन इन्द्रियों के संयम पर विशेष बल दिया जाता था। अध्ययन अध्यापन का लोक में प्रचुर प्रचलन था। रामायण में अनेक **प्रकार** के अध्यापकों का उल्लेख हुआ है– गुरू [7] आचार्य [8] कुलपति [9] श्रेत्रिय [10] तथा तापसगढ [11]। विद्यार्थी को अध्ययन काल में कठोर अनुशासनवद्ध जीवन व्यतीत करना पड़ता था। ऊषा काल में शय्यात्याग, स्नान, सन्ध्या, जप, होम, स्वाध्याय, गुरू सेवा आदि नित्यकर्म भी करने पड़ते थे।

छात्र का कर्तव्य गुरू के प्रति भक्ति भाव का था, वे उनकी आज्ञाओं का सर्वतोभावेन पालन करते थे। गुरू की आज्ञा से राम ने एक स्त्री (ताटका) का वध किया था [12] शिष्य का व्यवहार शिष्टाचार एवं विनम्रता पूर्ण होता था। शिष्य गुरू की सेवा शुश्रूषा भी करते थे। आश्रम की सफाई यज्ञ सामग्री एकत्रित करना आदि शिष्य के ही कार्य थे। [13]

वर्ण व्यवस्था

रामायणकालीन समाज में चारों वर्णों (चातुर्वर्ण्य) का स्पष्ट उल्लेख किया है। [14] महाराजा दशरथ के अश्वमेघ यज्ञ में सहस्त्रों की संख्या में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र आमंत्रित किये गये थे। [15] रामायण में वैदिक 'पुरुष–सूक्त' द्वारा प्रतिपादित इस भाव को स्वीकार किया गया है विराट पुरुष के मुख में ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए । [16]

रामायण में वर्णाश्रम समाज सुचारू रूप से चला है। सब प्राणियों का जन्म से ही अपना–अपना कर्म निश्चित् होता है। वर्ण व्यवस्था के आरम्भ से ही वेदों का पठन–पाठन स्वाध्याय और तपस्या ब्राह्मणों के मुख्य कर्म रहे हैं। [17] क्षत्रियों को विशेष रूप से ब्राहमण और गौओं की रक्षा करनी पडती थी, शरण में आये हुए किसी भी प्राणी को अभय दान देना उनका धर्म था। [18] वैश्यलोग वर्णाश्रम व्यवस्था को आर्थिक संवल प्रदान करते थे। उनका मुख्य कार्य अर्थोपार्जन करना था। शूद्रों को सबसे निम्न स्थान प्राप्त था, उनका कार्य तीनों वर्णो की सेवा करना था। [19]

वर्णधर्म के साथ आश्रम का भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। रामायण के समय में चतुराश्रमों की संख्या निष्चित रूप से चार बन चुकी थी। [20] विद्यार्थी के लिए ब्रह्मचर्याश्रम विवाहितो के ग्रहस्थाश्रम, अर्थोपार्जन से विरक्त वनवासी तपस्वी के लिए वानप्रस्थाश्रम, और संसार त्यागी–वैरागी के लिए संन्यास आश्रम था। इन चारों आश्रमों से गृहस्थाश्रमों का सर्वश्रेष्ठ स्थान था। ऋषि, योगी बिना वानप्रस्थाश्रम के ही संन्यास में प्रवेश हो जाया करते थे। अतः रामायण में समाज अत्यन्त सर्वोपरि रहा है।

निष्कर्ष

पर्यावरण प्रकृति के रूप का ही वर्णन नहीं करता वल्कि समाज को अपने में अन्तर्निहित भी करता है, जिसके साथ समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, सांस्कृतिक जीवन, व्यक्ति समुदाय के अन्तर्सम्बन्ध मनोविज्ञान आदि में पर्यावरण के तत्व समाहित है।

सन्दर्भ सूची

1. ऋग्वेद, 7/35/05
2. वाल्मीकि रामायण, 2/118/5
3. पूर्वैरयमभिप्रेतो गतो मार्गेऽनुगम्यते। वाल्मीक रामायण, 2/21/36
4. वाल्मीकि रामायण, 2/73/10
5. वाल्मीकि रामायण, 1/61/4
6. वाल्मीकि रामायण, 1/22/20
7. वाल्मीकि रामायण, 2/111/3
8. वाल्मीकि रामायण, 2/111/4
9. वाल्मीकि रामायण, 2/116/4
10. वाल्मीकि रामायण, I 1/1/1
11. वाल्मीकि रामायण, 1/14/12
12. वाल्मीकि रामायण, 1/25/22
13. वाल्मीकि रामायण, 3/1/4–5
14. चातुर्वर्ण्य स्वधर्मेण–नित्यमेवा भिपालयन्। वाल्मीकि रामायण, 1/4/6
15. निमन्त्रयस्व ब्राह्मणान्, क्षत्रियान, वैष्यान, शूद्राश्चैव सहस्त्रशः। वाल्मीकि रामायण, 1/13/20
16. मुखतो ब्राह्मणा जाता उरसः क्षत्रियास्तथा। ऊरूभ्यां जज्ञिरे वैश्याः पदंभ्यां शूद्रा इतिश्रुतिः।। वाल्मीकि रामायण, 3/14/30
17. ब्राह्मणा वेदपारगा, वाल्मीकि रामायण, 2/15/1
18. वाल्मीकि रामायण, 1/26/4–5
19. वाल्मीकि रामायण, 6/18/27
20. वाल्मीकि रामायण, 2/100/62